भू-जल और जन-जागृति

रामचन्द्र लोंबरा
अनुसंधान सहायक
क्षेत्रीय केन्द्र, जम्मू

स्वतंत्रता हासिल करने के बाद, हमारे देश ने चहुमुखी विकास किया । परन्तु विकास की दृष्टि से हमारा जल-संसाधन का क्षेत्र अत्यन्त ही पिछड़ा हुआ है । आजादी के बाद जब जल संकट की चर्चा हुई तो गलत तरीके से प्रचार किया कि भू-गर्भ में असीमित जल राशि है । इसी प्रचार के मध्य नजर कई राज्यों ने बड़े पैमाने पर नलकूप भी लगवाये और प्रकृति के जल स्रोतों की अनदेखी की गई । जिसका दुष्परिणाम हमारे सामने है । आज हमारे देश के कई भागों में पीने के पानी का अभाव है जिससे प्रति वर्ष हजारों की संख्या में मनुष्य और जानवर अपनी जाने गँवा रहे हैं ।

हमारे देश को प्राकृतिक सम्पदा की दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न राष्ट्र कहा जा सकता है क्योंकि प्राकृतिक दृष्टि से यहाँ पर जल की कमी नहीं है । आवश्यकता इस बात की है कि इसका सदुपयोग कैसे किया जायें ? इसके लिए जन-जागृति की आवश्यकता है नलकूपों द्वारा आवश्यकता से अधिक भू-जल को खींचा जा रहा है, प्राकृतिक जल स्रोतों की अनदेखी की गई जिसके परिणाम स्वरूप भू-गर्भ जल का स्तर गिर रहा है । उदाहरण के तौर पर उत्तर प्रदेश के गोरखपुर,फैजाबाद, लखनऊ, आगरा, मेरठ सहित कई क्षैत्रों तथा जम्मू कश्मीर के अनंन्तनाग क्षेत्रों में पिछले 25 वर्षो में, भू-गर्भ जल का स्तर असामान्य रूप से गिरा है । भू-गर्भ जल के स्तर में यह गिरावट सम्पूर्ण मानव जगत के लिए चेतावनी है । इसे नियन्त्रित करना ही होगा ।

पहले गाँवों में बड़े-बड़े तालाब व बावड़ियां हुआ करती थी जिनसे पानी एकत्र होता था तथा छनित होकर भू-गर्भ जल के स्तर को स्थिर रखता था । परन्तु बढ़ती आबादी के कारण इस प्रकार के जल स्रोतों की अनदेखी की गई और तालाब आदि सब बन्द हो गयें । जिनसे बरसात का अधिकांश पानी बेकार ही बह कर चला जाता है । अतः भू-गर्भ जल को बनाये रखने के लिए पुर्नभरण परम्परा को जीवित रखना होगा, इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर जागृति लानी होगी अन्यथा आने वाले 20-25 वर्षो बाद भावी पीढ़ी को पीने के लिए पानी नहीं मिलेगा और पानी एक विकट समस्या हो जायेगी ।